नईदुनिया

भारत-बांग्लादेश के बीच सीमा विवाद गरमाया बीएसएफ - बीजीबी ने फ्लैग मीटिंग की

ढाका (बांग्लादेश)

बांग्लादेश और भारत के बीच सीमा विवाद एक बार फिर गरमा गया है। बांग्लादेश ने दावा किया है कि भारत ने चार जून को 28 लोगों को बांग्लादेश की सीमा में धकेलने की कोशिश की। बार्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) ने कहा कि चापईनावाबगंज के गोमास्तापुर उपजिला के बंगाबाड़ी बार्डर इलाके में भारत के सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की इस कोशिश को उसने विफल कर दिया।

प्रोथोम अलो अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, चार हजार किलोमीटर से अधिक लंबी और जटिल भौगोलिक परिस्थितियों वाली इस अंतरराष्ट्रीय सीमा पर मुस्तैदी बढ़ाते हुए बीजीबी ने कहा है कि किसी भी अवैध घुसपैठ को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इस विषय पर गुरुवार दोपहर बंगाबाड़ी बार्डर पर बीजीबी और बीएसएफ के बीच औपचारिक बातचीत (फ्लैग मीटिंग) हुई। दोनों पक्षों ने कहा कि इस मुद्दे पर अपने वरिष्ठ अधिकारियों से बात कर इसका समाधान निकाला जाएगा। बैठक के बाद बीजीबी की 16वीं बटालियन के कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल मोहम्मद आरिफुल इस्लाम मासूम ने पत्रकारों को यह जानकारी दी। कमांडर ने बताया कि इससे पहले बुधवार तड़के बीएसएफ के जवानों ने 28 लोगों को बांग्लादेश में धकेलने की कोशिश की थी। बीजीबी के विरोध के कारण यह कोशिश नाकाम रही। इन 28 लोगों में 12 पुरुष, 10 महिलाएं और 6 बच्चे शामिल हैं। वे फिलहाल सीमा पर जीरो लाइन (नो मैन्स लैंड) पर रुके हुए हैं। उन्होंने कहा कि इन 28 लोगों को किसी भी हाल में बांग्लादेशी सीमा में घुसने नहीं दिया जाएगा।

कमांडर आरिफुल इस्लाम ने बताया कि बंगबाड़ी सीमा के कुछ हिस्से ऐसे हैं, जहां से लोगों को धकेलकर अंदर भेजना अपेक्षाकृत आसान होता है। बीएसएफ के जवान ऐसा ही करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि हमने सीमा पर पहले से ही अपनी चौकसी और सतर्कता बढ़ा दी है। बताया गया है कि इस संवेदनशील मुद्दे पर आठ से 11 जून के बीच नई दिल्ली में दोनों देशों के महानिदेशक स्तर की बैठक होने वाली है। बैठक में सीमा पर तनाव कम करने के मुद्दे पर चर्चा होने की उम्मीद है।

न्यूज ब्रीफ

ईरान जंग रोकने का प्रस्ताव अमेरिकी हाउस में पास, संसद की मंजूरी बिना सैन्य कार्रवाई पर रोक की मांग

तेल अवीव/तेहरान/वाशिंगटन। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने ईरान के खिलाफ जारी सैन्य अभियान रोकने से जुड़ा प्रस्ताव पास कर दिया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प कांग्रेस की मंजूरी के बिना सैन्य कार्रवाई जारी नहीं रख सकते। हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स में यह प्रस्ताव 215-208 वोटों से पारित हुआ। चार रिपब्लिकन सांसदों ने भी डेमोक्रेट्स के साथ वोट देकर ट्रम्प के खिलाफ रुख अपनाया। प्रस्ताव के तहत ट्रम्प को ईरान के खिलाफ आगे की सैन्य कार्रवाई के लिए कांग्रेस से मंजूरी लेनी होगी। मंजूरी नहीं मिलने पर अमेरिकी सैन्य बलों को वापस बुलाने की मांग की गई है। यह प्रस्ताव अब सीनेट में जाएगा। वहां मंजूरी मिलने के बाद इसे राष्ट्रपति के पास भेजा जाएगा। हालांकि माना जा रहा है कि ट्रम्प इस प्रस्ताव को वीटो कर सकते हैं। इससे पहले ट्रम्प ने एक पाडकास्ट इंटरव्यू में कहा था कि ईरान के खिलाफ कार्रवाई का फैसला उन्होंने खुद लिया था। उन्होंने कहा था, किसी ने मुझे इसके लिए उकसाया या प्रभावित नहीं किया। यह मेरा अपना फैसला था। मतदान को ट्रम्प की रिपब्लिकन पार्टी के भीतर बढ़ती असहमति के तौर पर देखा जा रहा है। ईरान युद्ध को लेकर अमेरिका में जनसमर्थन भी सीमित रहा है और बढ़ती ईंधन कीमतों को लेकर चिंता बनी हुई है। इजराइल ने दक्षिणी लेबनान के लोगों को फिर चेतावनी दी इजराइली सेना ने दक्षिणी लेबनान के लोगों को जहरानी नदी के दक्षिण वाले इलाकों में न जाने की चेतावनी दी है। सेना का कहना है कि क्षेत्र में हिजबुल्लाह के ठिकानों के खिलाफ अभियान अभी जारी है।

पीओके में हड़ताल से निपटने के लिए अतिरिक्त बल तैनात करने का फैसला

मुजफ्फराबाद (पीओके) पाकिस्तान। संघीय सरकार ने पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर (पीओके) में नौ जून को ज्वाइंट अवामी एक्शन कमेटी के विरोध प्रदर्शन (हड़ताल) के आह्वान के मद्देनजर अतिरिक्त सिविल आर्म्ड फोर्स और पुलिस कर्मियों को तैनात करने का फैसला किया गया है। स्थानीय सरकार ने पर्यटकों के लिए चेतावनी भी जारी है। दुनिया न्यूज की रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि 1,000 पंजाब रेंजर्स और 2,000 फ्रंटियर कांस्टेबुलरी के जवानों को पीओके भेजा जाएगा।। इसके अलावा, पीओके में इस्लामाबाद पुलिस के 2,000 अधिकारी और सिंध पुलिस के 1,000 अधिकारी भी तैनात किए जाएंगे। पीओके सरकार ने पर्यटकों के लिए चेतावनी भी जारी की है। पीओके सरकार ने लोगों से अपील की है कि वे प्रांत में प्रवेश करने से बचें और पांच जून से 20 जून के बीच गैरजरूरी यात्रा न करें। जो लोग पर्यटन या अन्य उद्देश्यों से इस क्षेत्र की यात्रा करने की योजना बना रहे हैं, उन्हें अपनी यात्रा स्थगित करने की सलाह दी गई है।

यूएफओ के पीछे एलियंस वाली बात बकवास, यह सब नानसेंस है, चीनी नास्त्रेदमस ने अमेरिका की यूएफओ फाइल्स पर की डरावनी भविष्यवाणी

बीजिंग। चीन के नास्त्रेदमस कहे जाने वाले प्रोफेसर जियांग ज्यूकिन ने ट्रंप प्रशासन द्वारा हाल ही में जारी किए गए यूएफओ फाइल्स पर एक डरावनी भविष्यवाणी की है। जियांग ज्यूकिन चीनी-कनाडाई शिक्षक और राजनीतिक विश्लेषक है। पहले भी कई भविष्यवाणियां कर चुके हैं, जिन्हें उनके समर्थक सही बताते हैं। अब उन्होंने यूएफओ को लेकर चेतावनी दी है कि यह सिर्फ एलियंस की बात नहीं, बल्कि समाज में बड़े अत्याचार होंगे और वह टूटेगा। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जियांग को चीन का नास्त्रेदमस इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप के 2024 में वापस सत्ता में आने, अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच संघर्ष जैसी कई घटनाओं की पहले से भविष्यवाणी की थी। अब उन्होंने ट्रंप सरकार द्वारा यूएफओ/ यूएपी फाइल्स जारी करने पर अपनी राय दी है। मई 2025 से ट्रंप प्रशासन ने पहले गुप्त रखे गए यूएफओ या यूएपी से जुड़े दस्तावेज, वीडियो और फोटो जारी करना शुरू कर दिया है। अब तक दो बड़ी रिलीज हो चुकी हैं। इनमें 46 वीडियो शामिल हैं जिनकी मांग कांग्रेस कर रही थी।

दुनिया भर के टकलों ने लंदन में मनाया खुलकर जश्न

लंदन

लंदन के सोहो इलाके में बीते दिनों गंजे पुरुषों के लिए खास मेला आयोजित किया गया, जिसमें दुनिया भर के देशों से पहुंचे सैकड़ों लोगों ने गंजेपन का खुलकर जश्न मनाया। बीती 14 मई को किए गए इस आयोजन ने दुनिया भर के लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। आमतौर पर बाल झड़ने को लेकर लोग चिंता और तनाव में रहते हैं, लेकिन इस आयोजन में गंजेपन को गर्व, आत्मविश्वास और खुशी के साथ सेलिब्रेट किया गया। यह अनोखा इवेंट सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जहाँ इसकी तस्वीरें और वीडियो लोगों को चौंका रहे हैं और आकर्षित कर रहे हैं। वायरल तस्वीरों और वीडियो में देखा जा सकता है कि बड़ी संख्या में गंजे पुरुष एक जगह इकट्ठा हुए और उन्होंने जमकर मस्ती की। कोई फ्री बीयर का आनंद लेता नजर आया तो कोई संगीत की धुन पर नाचता दिखा। कई लोग एक-दूसरे से गले मिलते और अपने अनुभव साझा करते दिखाई दिए, जिससे एक अद्भुत समुदाय और अपनेपन का माहौल बन गया।

आयोजकों ने इस कार्यक्रम को बाल्ड प्राइड यानी गंजेपन का गर्व नाम दिया था। आयोजकों का कहना है कि समाज में गंजेपन को अक्सर मजाक या शर्म से जोड़कर देखा जाता है, जबकि इसे सामान्य रूप से स्वीकार किया जाना चाहिए। उनका मानना है कि कई पुरुष बाल झड़ने के कारण आत्मविश्वास खो देते हैं और मानसिक तनाव का सामना करते हैं। इस आयोजन का मकसद यही था कि लोग गंजेपन को कमजोरी नहीं बल्कि अपनी पहचान और स्टाइल के रूप में अपनाएं और इसे लेकर शर्मिंदगी महसूस न करें। कार्यक्रम में शामिल कई लोगों ने अपनी दिलचस्प कहानियां भी साझा कीं।

कुछ प्रतिभागियों ने बताया कि उन्होंने वर्षों तक बाल वापस लाने के लिए तरह-तरह के तेल, दवाइयां और उपचार अपनाए, लेकिन जब कोई फायदा नहीं हुआ तो उन्होंने आखिरकार गंजेपन को स्वीकार कर लिया। अब वे इसे लेकर शर्मिंदगी नहीं बल्कि गर्व महसूस करते हैं और खुलकर जीवन जीते हैं। इस इवेंट का सबसे बड़ा आकर्षण फ्री बीयर रही, जिसने माहौल को और भी खुशनुमा बना दिया। लोग बीयर पीते हुए हंसते-मुस्कुराते और एक-दूसरे के साथ तस्वीरें खिंचवाते नजर आए। कुछ प्रतिभागियों ने तो अपने गंजे सिर पर खास पालिश भी करवाई, जिससे उनका सिर और ज्यादा चमकता दिखाई दे रहा था। पूरे आयोजन का माहौल बेहद हल्का-फुल्का और मनोरंजक रहा, जहाँ हर कोई अपनी पहचान को सेलिब्रेट कर रहा था। इस मेले में केवल ब्रिटेन ही नहीं, बल्कि अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी और भारत समेत कई देशों से लोग पहुंचे थे। भारतीय मूल के एक प्रतिभागी ने कहा कि भारत में गंजेपन को लेकर अक्सर मजाक बनाया जाता है, लेकिन इस आयोजन में शामिल होकर उन्हें महसूस हुआ कि वे अकेले नहीं हैं और यहाँ हर कोई उन्हें स्वीकार करता है।

सोशल मीडिया पर इस आयोजन की तस्वीरें और वीडियो तेजी से वायरल हो रही हैं। लोग मजेदार प्रतिक्रियाएं देते हुए इसे टकलों का वर्ल्ड कप और सबसे चमकदार पार्टी जैसे नाम दे रहे हैं। कई यूजर्स इसे बाडी पाजिटिविटी मूवमेंट का हिस्सा भी बता रहे हैं, जो शरीर के हर रूप को स्वीकार करने की वकालत करता है। विशेषज्ञों के मुताबिक, पुरुषों में गंजापन मुख्य रूप से जेनेटिक और हार्मोनल कारणों से होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि डीएचटी हार्मोन बालों की जड़ों को कमजोर कर देता है, जिसके कारण उम्र बढ़ने के साथ बाल झड़ने लगते हैं। दुनिया भर में लगभग 50 प्रतिशत पुरुष 50 साल की उम्र तक किसी न किसी स्तर पर गंजेपन का सामना करते हैं।

अमेरिकी संसद ने राष्ट्रपति ट्रंप के अधिकार किए सीमित

वाशिंगटन

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जहां एक तरफ इजरायल और लेबनान के बीच सीजफायर कराने में कूटनीतिक रूप से कामयाब रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ ईरान युद्ध के मुद्दे पर वे अपने ही देश में राजनीतिक रूप से घिर गए हैं। अमेरिकी संसद के निचले सदन यानी प्रतिनिधि सभा (हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स) ने राष्ट्रपति की ईरान से जुड़ी युद्ध शक्तियों को सीमित करने वाला एक बड़ा प्रस्ताव पास कर दिया है। इसे राष्ट्रपति ट्रंप के लिए एक बड़ा राजनीतिक झटका माना जा रहा है। इस वोटिंग की सबसे दिलचस्प और हैरान करने वाली बात यह रही कि ट्रंप की अपनी रिपब्लिकन पार्टी के चार सांसदों ने पार्टी लाइन से हटकर विपक्ष का साथ दिया और इस प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया। सदन में इस प्रस्ताव के पक्ष में 215 और विरोध में 208 वोट पड़े। रिपब्लिकन सांसद थामस मैसी, ब्रायन फिट्जपैट्रिक, टाम बैरेट और वारेन डेविडसन ने अपनी ही सरकार के खिलाफ जाते हुए डेमोक्रेट्स के सुर में सुर मिलाया। विपक्षी दल डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसद ग्रेगरी मीक्स द्वारा पेश किए गए इस प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य ईरान के खिलाफ किसी भी संभावित सैन्य कार्रवाई में राष्ट्रपति के स्वतंत्र अधिकारों और शक्तियों पर अंकुश लगाना है।

पिछले कई हफ्तों से डेमोक्रेट्स सांसद ट्रंप के युद्ध संबंधी विशेषाधिकारों को लगातार चुनौती दे रहे थे, जिसमें अंतत: कुछ रिपब्लिकन सांसदों का भी समर्थन मिल गया। हालांकि, यह प्रस्ताव सीधे तौर पर कानून का रूप नहीं लेगा, क्योंकि अमेरिकी संसदीय नियमों के अनुसार यह एक कंकरेन्ट रिजाल्यूशन (समवर्ती प्रस्ताव) है, जिसके लिए राष्ट्रपति के हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं होती। इसके बावजूद, इसे ट्रंप की आक्रामक नीतियों के खिलाफ अमेरिकी कांग्रेस की गंभीर नाराजगी के रूप में देखा जा रहा है। इसके कानूनी प्रभाव को लेकर विशेषज्ञों में मतभेद हैं; कुछ इसे बाध्यकारी मान रहे हैं, तो कुछ का कहना है कि इसका केवल प्रतीकात्मक महत्व है। इस बीच, ईरान के साथ जारी संघर्ष के चौथे महीने में प्रवेश करने के बाद से अमेरिका के भीतर इस युद्ध की समयसीमा को लेकर बेचैनी और सवाल बढ़ने लगे हैं। अमेरिकी संविधान और वार पावर एक्ट के प्रावधानों के तहत राष्ट्रपति संसद की पूर्व मंजूरी के बिना 60 दिनों से अधिक समय तक अमेरिकी सेना को किसी भी सक्रिय विदेशी युद्ध में तैनात नहीं रख सकते। दूसरी ओर, हाउस स्पीकर माइक जानसन ने इस प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करते हुए राष्ट्रपति ट्रंप का बचाव किया है।

न्यूजीलैंड के 4 सांसदों को चीन ने बैन किया

बीजिंग। चीन ने ताइवान का दौरा करने वाले न्यूजीलैंड के चार सांसदों के चीन, हांगकांग और मकाऊ में प्रवेश पर एक साल का प्रतिबंध लगा दिया है। साथ ही बीजिंग ने संकेत दिया है कि यदि सांसद अपने ताइवान दौरे के लिए माफी मांगते हैं तो इस प्रतिबंध को हटाया जा सकता है। न्यूजीलैंड संसद सेवा द्वारा सांसदों को भेजे गए ईमेल में बताया गया कि चीन के दूतावास ने यह संदेश पहुंचाया है। प्रतिबंध उन चार सांसदों पर लगाया गया है जिन्होंने मई में ताइवान की राजधानी ताइपे का संसदीय दौरा किया था। न्यूजीलैंड के विदेश मंत्री विंस्टन पीटर्स के कार्यालय ने कहा कि ऐसे दौरे वर्षों से होते रहे हैं और यह देश की वन चाइना नीति के अनुरूप हैं। न्यूजीलैंड बीजिंग को चीन की वैध सरकार के रूप में मान्यता देता है, लेकिन ताइवान के साथ अनौपचारिक संबंध भी बनाए रखता है। चीन के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने प्रतिबंध की पुष्टि करते हुए कहा कि ताइवान मुद्दे पर चीन की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि ताइवान से जुड़े मामलों में रेड लाइन पार करने वालों को इसकी कीमत चुकानी होगी।

डाकिये की तीन बार रुकी दिल की धडकन, फिर भी है जिंदा

लंदन

यूनाइटेड किंगडम में रायल मेल में काम करने वाले डाक कर्मचारी कार्ल लाकवुड का दिल एक नहीं बल्कि तीन बार धड़कना बंद हो गया था। मेडिकल रिकार्ड्स के अनुसार, वे तकनीकी रूप से तीन बार मौत के मुंह में जा चुके थे, लेकिन डाक्टरों ने हर बार उन्हें वापस जिंदगी दे दी। अब कार्ल पूरी तरह स्वस्थ हैं और दोबारा काम पर लौट चुके हैं। यह घटना साल 2019 की है, जब कार्ल अपनी ड्यूटी पर तैनात थे। अचानक उन्हें भयंकर कार्डियक अरेस्ट आया और वे वहीं बेहोश होकर गिर पड़े। अस्पताल पहुंचने तक उनका दिल तीन बार पूरी तरह रुक चुका था, जिससे उनकी जान जाने का खतरा बेहद बढ़ गया था। डाक्टरों ने लगातार सीपीआर और बिजली के झटकों की मदद से उनके दिल को दोबारा चालू किया, जो किसी चमत्कार से कम नहीं था। इस पूरी घटना ने न सिर्फ उनके परिवार बल्कि डाक्टरों को भी हैरान कर दिया, क्योंकि ऐसे मामलों में जीवित बचने की संभावना बेहद कम होती है। कार्ल कोई बीमार या कमजोर व्यक्ति नहीं थे। वे बेहद फिट और सक्रिय जीवनशैली जीते थे। डाकिया होने के कारण वे रोजाना लंबी दूरी पैदल चलते थे, नियमित व्यायाम करते थे और उन्हें पहाड़ों पर ट्रैकिंग तथा अल्ट्रा रनिंग का शौक था।

हालांकि उन्हें पहले से एट्रियल फिब्रिलेशन नाम की दिल की बीमारी थी, जिसमें दिल की धड़कन सामान्य ताल में नहीं चलती। इसके

बावजूद वे नियमित दवाइयां ले रहे थे और सामान्य जीवन बिता रहे थे, इसलिए उन्हें कभी ऐसे हादसे का अंदाजा नहीं था। कार्ल ने बताया कि उन्हें कभी अंदाजा नहीं था कि उनके साथ ऐसा हादसा हो सकता है। उन्होंने कहा कि वे हमेशा खुद को फिट मानते थे, इसलिए दिल का दौरा पड़ना उनके लिए भी बड़ा झटका था। कार्ल के मुताबिक, अगर उस दिन उनके सहकर्मी ने तुरंत उन्हें गिरते हुए नहीं देखा होता और प्राथमिक उपचार नहीं दिया होता, तो शायद उनकी जान नहीं बच पाती। कार्ल के दोस्त ने एम्बुलेंस पहुंचने तक लगातार उनकी छाती दबाकर सीपीआर दिया। इसी वजह से शरीर में रक्त संचार बना रहा और उनके दिमाग को गंभीर नुकसान नहीं पहुंचा।

डाक्टरों का कहना है कि सही समय पर दिया गया सीपीआर कई बार मौत और जिंदगी के बीच सबसे बड़ा अंतर साबित होता है, खासकर कार्डियक अरेस्ट के मामलों में। स्वस्थ होने के बाद कार्ल ने अपनी जिंदगी में कई बदलाव किए हैं। अब वे पहले की तरह पैदल डाक बांटने के बजाय रायल मेल की वैन चलाकर पार्सल डिलीवर करते हैं।

बांग्लादेश में अवामी लीग की नेता सेलीना हयात को देररात जेल से रिहा किया गया

ढाका (बांग्लादेश)

अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग की दिग्गज नेता और नारायणगंज सिटी कारपोरेशन की पूर्व मेयर सेलीना हयात आइवी को जेल से जमानत पर रिहा कर दिया गया। पिछले साल सितंबर में गिरफ्तार हुई सेलीना की रिहाई पूर्व स्पीकर शिरीन शार्मिन चौधरी के बाद अवामी लीग के किसी बड़े नेता को मिली दूसरी बड़ी राहत है।

प्रोथोम अलो अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, सेलीना हयात को एक साल से ज्यादा समय तक जेल में रहना पड़ा। उन्हें बुधवार रात लगभग 10:15 बजे गाजीपुर की काशिमपुर सेंट्रल महिला जेल से रिहा किया गया। रात करीब 12:30 बजे वह नारायणगंज के देवभोग इलाके में स्थित अपने घर पहुंचीं। उनकी रिहाई की खबर मिलने के बाद रात 11:00 बजे से ही उनके घर के बाहर रिश्तेदार, समर्थक और शुभचिंतक जुटने लगे। लंबे समय तक जेल में बंद रहने के बाद उनकी वापसी पर

लोगों ने राहत की सांस ली।

सेलीना ने घर पहुंचने पर सबसे पहले देश की जनता का आभार व्यक्त किया। उन्होंने पत्रकारों से कहा, मैं न्यायपालिका की बहुत आभारी हूं और सरकार को भी धन्यवाद देती हूं। मुझे उम्मीद है कि एक ऐसी मानवीय सरकार बनेगी जो सभी को साथ लेकर चलेगी। जेल में मेरे जैसी कई महिलाएं हैं जो बेगुनाह हैं। मुझे उम्मीद है कि सरकार उनके प्रति भी सहानुभूति दिखाएगी। पुलिस ने सेलीना आइवी को पिछले साल नौ मई की तड़के नारायणगंज स्थित उनके घर से गिरफ्तार किया था। इसके बाद उन पर कुल 12 मामले दिखाए गए। इनमें 2024 के भेदभाव-विरोधी आंदोलन से जुड़े हत्या के तीन मामले और हत्या के प्रयास के दो मामले शामिल थे। हालांकि उन्हें कई मामलों में कई बार जमानत मिल गई थी, लेकिन नए दर्ज मामलों में उन्हें बार-बार गिरफ्तार दिखाया जाता रहा।

उच्च न्यायालय ने पिछले माह 30 अप्रैल को उन्हें सिद्धिरगंज पुलिस स्टेशन में दर्ज हत्या के दो मामलों में अंतरिम जमानत दी थी। उस फैसले से उनकी रिहाई का रास्ता साफ हुआ। बुधवार रात रिहाई के समय उनके वकील और परिवार के सदस्य जेल गेट पर पहुंचे और उनके बाहर निकलते ही सभी भावुक हो गए। सेलीना 2003 से 2011 तक नारायणगंज की मेयर रही हैं। 2011 के चुनाव में आइवी ने अवामी लीग के प्रभावशाली और बागी नेता शमीम उस्मान को 1,00,000 से अधिक मतों के अंतर से हराया था।

अपने पूरे राजनीतिक करियर के दौरान उन्होंने नारायणगंज में आतंकवाद और आपराधिक हिंसा के खिलाफ खुलकर आवाज उठाई। आइवी के घर पहुंचने पर रिश्तेदारों, शुभचिंतकों और समर्थकों ने उनका स्वागत किया। शोन्त्राश निर्मूल टोकी मंच के संयोजक रफिउर रब्बी, नारायणगंज प्रेस क्लब के अध्यक्ष अबू सईद मसूद, वकील जियाउल इस्लाम और शाहीन महमूद ने उन्हें पुष्प गुच्छ भेंट किए।